



तकनीकी खेती की दिशा में बढ़ते कदम

आराधना कुमारी*, विनोद कुमार गर्ग*, सतीश कुमार शर्मा* और पी.के. मिश्र*

“आज के बदलते युग में जहां युवा खेती से दूरी बना रहे हैं, वहीं कुछ युवा ऐसे भी हैं, जो खेती-किसानी में नई-नई तकनीकियों को अपनाकर अपने क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में सफलता का परचम लहरा रहे हैं। इसी युवा पीढ़ी में श्री रोहित वर्मा ने कृषि महाविद्यालय गंज बासौदा (जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर) से स्नातक तथा कृषि महाविद्यालय, सीहोर (राजमाता कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर) से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत कृषि के क्षेत्र में अच्छा कार्य करते हुए दूसरे पढ़े-लिखे युवाओं के लिए मिसाल कायम की है।”

आज के युग में ज्यादातर पढ़े-लिखे युवा कृषि से खुद को दूर करते जा रहे हैं। इस कारण कृषि में नई-नई तकनीकियों तथा नवाचार का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। ऐसे युवा जिनके पूर्वज भी खेती-बाड़ी पर निर्भर थे, वे भी अन्य कोई काम करना पसंद करते हैं, परंतु खेती नहीं। इस परिस्थिति में कृषि महाविद्यालय गंज बासौदा के छात्र, श्री रोहित वर्मा एक मिसाल के रूप में कार्य कर रहे हैं। वह एक बहुत अच्छे, प्रगतिशील और अनुकरणीय किसान के रूप में इस कार्य को संपन्न कर रहे हैं। उनके कार्य को देखने के लिए दूर-दूर से किसान समूह बनाकर अपने

*कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, गंज बासौदा, विदिशा (मध्य प्रदेश)

ही राज्य से नहीं बल्कि अन्य राज्यों से भी आ रहे हैं।

श्री रोहित वर्मा (पिता श्री शिवनारायण वर्मा) ग्राम हलिया खेड़ी, पोस्ट तोरणिया, तहसील इछावर, जिला सीहोर (मध्य प्रदेश) के निवासी हैं। उनके परिवार में परंपरागत तौर से कृषि की जाती थी। उस खेती से परिवार पालना तथा घर का खर्च निकलना मुश्किल सा ही लग रहा था। फिर श्री रोहित ने सोचा कि खेती को इस प्रकार से किया जाए, जिससे घर-परिवार की आमदनी बढ़े। फसल का उत्पादन अच्छा हो तथा इसे बाजार में बेचकर अच्छा मूल्य प्राप्त कर व्यवसाय का रूप दिया जा सके। इस सबको ध्यान में रखकर श्री रोहित ने कृषि विषय की तरफ

अपना रुझान दिखाया और इंटरमीडिएट में कृषि विषय का चयन कर प्री-एग्रीकल्चर टेस्ट पास करके कृषि महाविद्यालय गंज बासौदा में स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। यहां पर उन्होंने 4 वर्ष खेती के विषयों की संपूर्ण जानकारी ली।

आधुनिक कृषि की शुरुआत

वर्ष 2014-15 में कृषि महाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद श्री रोहित ने अपने घर पर सोयाबीन की एक नई किस्म जेएस-2034 को एक एकड़ में लगाया। इसका उत्पादन 9 क्विंटल प्रति एकड़ हुआ था, जो कि पुरानी किस्म जेएस-9560 से 3 क्विंटल प्रति एकड़ ज्यादा था। इसके बाद वर्ष 2018-19 में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम, जो



सोयाबीन की फसल

सोशल मीडिया द्वारा जानकारी

श्री रोहित ने किसानों की सेवा के लिए एक फेसबुक चैनल भी बनाया है, जिसका नाम भारतीय किसान एकता संघ रखा है, इस पर 1050 फॉलोअर हैं और खेत और खेती बाड़ी संबंधित वीडियो देखते हैं। वह अपने फार्म में प्रक्षेत्र प्रदर्शन का कार्य भी करते हैं, जिसमें किसान समूह बनाकर भ्रमण करने आते हैं और सोयाबीन तथा अन्य फसलों की खेती से संबंधित जानकारी प्राप्त करते हैं। श्री रोहित किसानों को अच्छे किस्म का बीज उपलब्ध करवाकर, नई तकनीक और किस्मों का प्रदर्शन करके बहुत प्रगतिशील किसान के रूप में वह अपनी पहचान बना रहे हैं।



प्रगतिशील किसान श्री रोहित वर्मा

भाकृअनुप से संचालित है, के तहत रायसेन केवीके में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्हें केवीके से गेहूं की नई किस्म एचआई-8759 (पूसा तेजस) और एचआई-8737 (पूसा अनमोल) मिली। इसे उन्होंने अपने खेत में लगाया। इन किस्मों का उत्पादन उनकी पुरानी किस्मों से ढाई गुना ज्यादा हुआ, जो 28 से 30 क्विंटल प्रति एकड़ थी। फिर सीहोर कृषि कॉलेज के संपर्क में आने के बाद चने की दो नवीन किस्मों आरवीजी-202 और 204 को लगाया, जिनका उत्पादन 8 से 10 क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त हुआ।

खेती को व्यवसाय बनाने की प्रेरणा श्री रोहित को वर्ष 2018-19 में शैक्षिक

भ्रमण में विभिन्न कृषि अनुसंधान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों तथा कृषि विज्ञान केंद्रों का भ्रमण कर अत्याधुनिक खेती की जानकारी लेने के बाद मिली। इन केंद्रों से इन्हें अनेक नवाचार जैसे कि एक गन्ने की नर्सरी तैयार करना, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, प्याज की रबी और खरीफ किस्मों, लहसुन की एक कली वाली फसल, ड्रिप तथा टपक सिंचाई पद्धति का प्रयोग करके विदेशों जैसी खेती की तकनीकों को सीखा। इसके साथ ही विभिन्न फूलों तथा उनकी किस्मों और ग्रीनहाउस और पॉलीहाउस में संरक्षित कृषि इत्यादि की जानकारी ली। भ्रमण से वापस आकर उन्होंने मछली

पालन का छोटे पैमाने पर कार्य भी शुरू किया। वह भविष्य में इस तकनीकी ज्ञान को अपनी खेती में आत्मसात करने की बात करते हैं।

श्री रोहित ने वर्तमान में अपनी पूरी 11 एकड़ जमीन में 11 प्रकार की अलग-अलग सोयाबीन की किस्मों को लगाया है। वह परंपरागत किसानों से बढ़कर एक प्रगतिशील किसान के रूप में कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2020-21 में श्री रोहित को 11 एकड़ जमीन से खरीफ में 7 लाख 30 हजार और रबी में 2 लाख 21 हजार की शुद्ध आय प्राप्त हुई अर्थात् 9 लाख 51 हजार की सालाना शुद्ध आय।

भाकृअनुप की द्विमासिक लोकप्रिय पत्रिका 'फलफूल' सितम्बर-अक्टूबर, 2023 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ अरबी उत्पादन की उन्नत तकनीक
- ◆ अर्धशुष्क क्षेत्र के लिए बेल की नई प्रजातियां
- ◆ पर्वतीय क्षेत्रों में पौष्टिक गुणों से भरपूर ब्रोक्ली की खेती एवं व्यंजन विधि
- ◆ पोषण वाटिका में छिपा सेहत का खजाना
- ◆ लोह तत्व से भरपूर कशेरुका
- ◆ फालसा : एक महत्वपूर्ण शुष्क फल
- ◆ पंचगव्य एक चमत्कारी जैविक खाद
- ◆ कन्टोला : एक दिव्य चमत्कारी सब्जी
- ◆ परवल, कुंदरु एवं ककरोल : महत्व एवं प्रवर्धन
- ◆ वर्टिकल खेती
- ◆ कैप गूसबेरी या रसभरी: भारत में एक नई नकदी फसल
- ◆ आलू की जल उपयोग दक्षता वाली प्रजातियां

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in